गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

कुलार्णवतन्त्र से एक श्लोक

कुलार्णवतन्त्र, १७.१३

आत्मभावप्रदानात्तु रागद्वेषादिवर्जनात्।
ध्यानैकनिष्टचित्तत्वादाराध्य इति कथ्यते॥

वे जिनका चित्त चरम सत्य के ध्यान में स्थिर है,
जो राग-द्वेष जैसे द्वन्द्वों के परे हैं,
और जो परमात्मभाव की स्थिति के प्रदाता हैं,
वे ही श्रीगुरु हैं, वे ही सच्चे आराध्य हैं।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।